



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II)  
PART II—Section 3—Sub-Section (II)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 570]

नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 13, 1989/भाद्रपद 22, 1911

No. 570] NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 13, 1989/BHADRA 22, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as  
a separate compilation

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

प्रविष्टि

नई दिल्ली, 13 सितम्बर, 1989

क्र. प्र. 719(प्र).—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 295 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, आय-कर नियम, 1962 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात्:—

1. (1) इन विधियों का संक्षिप्त नाम आय-कर (10वां संशोधन) नियम, 1989 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. आय-कर नियम 1962 में—

(क) भाग 7 में,

(i) नियम 38 क का कोप किया जाएगा;

(ii) नियम 39 के स्थान पर निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात्:—

“39. वह प्रमाण जो निर्धारिता की धारा 210 की उपधारा (5) के अधीन निर्धारण अधिकारी को सौंपी होती है, प्ररूप सं. 28 क में होगी;

(iii) नियम 40 में, उपनियम (5) के पश्चात्, निम्नलिखित उपनियम अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

“(6) इस नियम की कोई बात 1 अप्रैल, 1982 को प्रारंभ होने वाले निर्धारण वर्ष या किसी पञ्चात्वार की निर्धारण वर्ष के लिए किसी निर्धारण की बाधन लागू नहीं होगी।”

(ख) नियम 119क के स्थान पर, निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात्:—

“119क. अधिनियम के किसी उपबंध के अधीन निर्धारिता द्वारा संवेद्य व्याज का या केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारिता को संवेद्य व्याज का परिकलन करते समय,

(क) जहाँ ब्याज का परिकलन वार्षिक आधार पर किया जाता है, वहाँ वह अवधि, जिसके लिए ऐसे ब्याज का परिकलन किया जाता है, पूरे मास या मासों में पूर्णांकित की जाएगी और इस प्रयोजन के लिए मास के किसी भाग की उपेक्षा कर दी जाएगी; और इस प्रकार पूर्णांकित अवधि वह अवधि समझी जाएगी जिसकी बाबत ब्याज का परिकलन किया जाता है;

(ख) जहाँ ब्याज का परिकलन प्रत्येक मास या किसी अवधि में समाविष्ट किसी मास के भाग के लिए किया जाता है, वहाँ मास के किसी

भाग को पूर्ण मास समझा जाएगा और ब्याज का इस प्रकार परिकलन किया जाएगा;

(ग) कर, शास्ति की रकम या अन्य राशि, जिसकी बाबत ऐसा ब्याज परिकलित किया जाता है, एक सौ रुपये के निकटतम गुणज तक पूर्णांकित की जाएगी और इस प्रयोजन के लिए सौ रुपये के किसी भाग की उपेक्षा कर दी जाएगी, और इस प्रकार पूर्णांकित रकम वह रकम समझी जाएगी जिसकी बाबत ब्याज का परिकलन किया जाता है।”

(ग) परिशिष्ट 2 में,—

(i) प्ररूप सं. 28 के स्थान पर, निम्नलिखित प्ररूप रखा जाएगा, अर्थातः

प्ररूप सं. 28

(नियम 38 देखिए)

भाय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 210 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन अधिम कर के संदाय के लिए धारा 156 के अधीन भाग की सूचना।

सेवा में,

.....

.....

भाय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 210 के अधीन आपको सूचना दी जाती है कि अनुसूचित आदेश में यथा विनिर्दिष्ट ..... की राशि वित्तीय वर्ष 19..... 19..... के दौरान आपके द्वारा संदेय अवधारित की गई है।

2. रकम सारणी में उल्लिखित दो किस्तों में संदेय होगी।

सारणी

किस्त की नियत तारीख	संदेय रकम
15 दिसंबर, को या उससे पूर्व	ऐसे अधिम कर का कम से कम पचास प्रतिशत
15 मार्च को या उससे पूर्व	ऐसे अधिम कर की समस्त रकम जो पूर्वोक्त किस्त अवधि की किस्तों में संदेय रकम या रकमों, यदि कोई हो, द्वारा कम की गई है।

प्रबंधक, प्राधिकृत बैंक

रकम प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक  
प्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक  
(स्थान) पर संदेय है।

संदाय करने पर आपको उसकी रसीद दी जाएगी, इस प्रयोजन के लिए आशान संलग्न है/हैं। इस आशान में आप को संदाय करते समय प्रत्येक किस्त की रकम लिखनी चाहिए।

3. यदि पूर्वोक्त पहली किस्त के देय होने से पूर्व किसी भी समय, आप यह प्राक्कलित करते हैं कि 1 अप्रैल, 19..... को प्रारंभ होने वाले निर्धारण वर्ष से ससंगत पूर्व वर्ष के लिए अधिम कर के अधीन आपकी आय उस आय से, जिस पर आपको ऊपर उल्लिखित अधिम कर के संदाय के लिए कहा गया है, कम है और तदनुसार आप उस रकम से, जिसका संदाय करने की आपसे इस प्रकार अपेक्षा की गई है कम रकम का संदाय करना चाहते हैं तो आप अपने द्वारा किए गए निम्नतर प्राक्कलन के लिए कारणों निर्धारित अधिकारी को प्ररूप 28 क में भेज सकते हैं और धारा 209 में अधिकृत रीति में परिकलित ऐसी आय पर इस प्रकार संदेय अधिम कर का प्राक्कलन संलग्न कर सकते हैं और उस दशा में, आपको ऐसी रकम का (जो इस सूचना के पैरा 2 के अनुसार पहले ही संदेय किस्तों को कम करके आए) जैसी आपके प्राक्कलन के अनुसार है, उसमें ऐसे अनुपात में ऐसी तारीखों को जो उसमें विनिर्दिष्ट है संदाय करना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए आपको समुचित वाधानों में अपने प्राक्कलनों के अनुसार रकम लिखनी चाहिए। अधिम किस्त के देय होने से पूर्व किसी भी समय आप संदेय रकम का पुनरीक्षण कर सकते हैं और पहले से संदेय किसी किस्त से संबंधित किसी आधिक्य या कमी को किसी परबतवर्ती किस्त में समायोजित कर सकते हैं।

4. यदि आपके प्राक्कलन में, आपकी आय पर संदेय अधिम कर धारा 210 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन निर्धारण अधिकारी के किसी आदेश में विनिर्दिष्ट या उस धारा की उपधारा (5) के अधीन आपके द्वारा यथासूचित अधिम कर की रकम से अधिक है तो आप धारा 211 में विनिर्दिष्ट अधिम किस्त की देय तारीख को या उससे पूर्व अपने प्राक्कलन के अनुसार अधिम कर की ऐसी उच्चतर रकम के समुचित भाग का या संपूर्ण रकम का संदाय करेंगे।

5. यदि आप धारा 208 के अधीन अधिम कर का संदाय करने के लिए दायी हैं और आप ऐसे कर का संदाय करने में असफल रहते हैं या धारा 210 के उपबंधों के अधीन आपके द्वारा संवत् अधिम कर निर्धारित कर के 90 प्रतिशत से कम है तो आप धारा 234ख के उपबंधों के अनुसार ब्याज का संदाय करने के दायी होंगे। यदि आप विनिश्चित तारीखों तक अधिम कर की किस्तों का संदाय करने में असफल रहते हैं तो आप अधिनियम, 1961 की धारा 234ग के अनुसार ब्याज प्रभारित किया जाएगा।

निर्धारण अधिकारी

पता

स्थान

तारीख

प्ररूप सं. 28 का अनुसरण

आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 210 के अधीन आवेश

निर्धारित का नाम

जिला या क्षेत्र

प्रास्थिति में

स्थायी लेखा संख्यांक

पता

1. कुल आय जिसके आधार पर आपके द्वारा पश्चात्तवर्ती वर्ष जो वर्ष 19 . . . . .

19 . . . . . है, के लिए नियमित निर्धारण किया गया है।

आय की विवरणी फाइल की गई है।

2. अधिम कर के अधीन आय

3. अधिम कर की संगणना

करने के प्रयोजन के लिए हिसाब में

ली जाने वाली शुद्ध कृषि आय, यदि कोई है।

4. "अधिम कर के अधीन आय"

पर प्रचार्य सकल आय-कर

5. "अधिम कर के अधीन आय"

में सम्मिलित राशियाँ जिनकी बाबत आय-कर संदेय नहीं है या जिन पर आय कर का कोई रिबेट अनुज्ञेय है

(i) ऐसे व्यक्ति-संगम या घयष्टि व. . . . . निकाय या अरजिस्ट्रिकृत फर्म की, जिसके लाभों पर कर का संदाय पहले ही किया जा चुका है, आय में कांश।

(ii) आय-कर मुक्त प्रतिभूतियों व. . . . . पर ब्याज

(iii) अन्य सबे व. . . . .

6. कुल रकम जिस पर कर संदेय नहीं है व. . . . . और ऐसी किसी रकम पर आनुपातिक कर

7. कटौती कीजिए कर जो धारा 2. . . . . 192 से 195 के अधीन किसी आय पर (जैसे बहू अधिनियम के अधीन अनुज्ञेय कोई कटौतियाँ अनुज्ञात करने से पूर्व संगणित हैं) कटौती करने योग्य है और जो "अधिम कर के अधीन आय" की संगणना करते समय हिसाब में लिया गया है।

8. आय-कर की शुद्ध रकम व. . . . .

9. घटाइए : प्राकलित बोहरे आय-कर व. . . . . से, यदि कोई है, राहत सबे रकम

10. सबेय प्रतिशेष व. . . . .

11. घटाइए : तारीख . . . . . 19 . . . . . को तामीस की गई पूर्व मांग की सूचना के अनुपालन में धारा 210 के अधीन वित्तीय वर्ष का दौरान पहले ही संवत् कर

सबेय कर की शुद्ध रकम

12. कुल संदेय राशि (बंकों और गण्डों में)-----

र. (-----र.)

निर्धारण अधिकारी

पता

तारीख-----

\*टिप्पण: हिंदू अधिभक्त कुटुम्ब की दशा में कृपया यह बताएं कि क्या हिंदू अधिभक्त कुटुम्ब में कम से कम एक सदस्य ऐसा है जिसकी सुसंगत पूर्ववर्ष की कुल आय उसकी दशा में आय-कर के प्रभार्य न होने वाली अधिकतम रकम से अधिक है।

- (ii) प्रकृप सं. 28 क के स्थान पर, निम्नलिखित प्रकृप रखा जाएगा, अर्थातः  
 "प्रकृप सं. 28क"  
 (निबन्ध 38क देखिए)

आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 210(3)/210(4) के अधीन अधिम कर के संदाय के लिए अधिनियम की धारा 156 के अधीन मांग की सूचना के बारे में धारा 210 (5) के अधीन निर्धारण अधिकारी को सूचना

तारीख-----

हेरा में,

निर्धारण अधिकारी,

महोदय,

संदर्भ: निर्धारण वर्ष 19-----19-----के लिए -----के मामले में आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 210 (3)/210(4) के अधीन आय-कर के संदाय के लिए अधिनियम की धारा 156 के अधीन मांग की सूचना।

अधिम-कर के संदाय के लिए आय-कर अधिनियम की धारा 156 के अधीन मांग की सूचना और अधिनियम की धारा 210/(3) 210(4) के अधीन/ तारीख-----के आदेश की मुद्रा पर तारीख-----की तारीख----- (सूचना की तारीख की तारीख), की जा चुकी है।

2. मैं इसके द्वारा यह सूचना देता हूँ कि आपके द्वारा किया गया आय और संदेय अधिम कर का प्राक्कलन, जो प्रकृप 28 के ससंगत पूर्व में समाविष्ट है निम्नलिखित कारणों से अधिक है:—

- (i) प्रकृप सं. 28 में वर्णित संगणना में गणित संबंधी गलती है।
- (ii) नि. व. 19-----19-----के लिए निर्धारित आय की बाबत, आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 154 के अर्वास्तित्त अधिलेख की देखने से ही प्रकट होने वाली गलती थी, जिसके लिए तारीख-----की आदेशम फाइल कर दिया गया है फाइल किया जा रहा है।
- (iii) जालू वर्ष में पूंजी अधिलाभ शीर्ष के अधीन हानि हुई है कोई/आय नहीं हुई है।
- (iv) जालू वर्ष में धारा 2(24)(IX) में निदिष्ट प्रकृति की कोई आय नहीं हुई है।
- (v) कोई अन्य कारण (कारण निर्दिष्ट करें)।

3. ऊपर पैरा 2 में उल्लिखित कारणों के हिसाब में लेते हुए, निर्धारण वर्ष 19-----से सुसंगत पूर्व वर्ष के लिए आय का प्राक्कलन निम्नलिखित रूप में है:

प्राक्कलित--अधिमकर के अधीन आय:—

- (1) "बेतली" से आय-----
- (2) पूंजी अधिलाभों से आय-----
- (3) गृह संपत्ति से आय-----
- (4) कारबार या वृत्तिका-----के लाभ और अधिलाभ

(क) मेरे/हमारे द्वारा बलाए जा रहे कारखाने और बुनियादी से लाभ और

प्रभिलान

नाम

पता

(i)

(ii)

(ख) क्रम (क्रमों) से प्राप्त

क्रम का नाम

पता

नया क्रम का रजिस्ट्रीकरण निम्नलिखित संशुद्धि निर्धारण वर्ष में हुआ है।

प्राप्त का क्रम

(ग) व्यक्ति संगम या व्यक्ति निकाय से प्राप्त:

योग : (क) + (ख) + (ग)

(ग) अन्य स्रोतों से प्राप्त

(i) साधारण

(ii) खाज

(iii) अन्य प्राप्त [जिनके अंतर्गत द्वारा 2(24) (ix) में निर्दिष्ट प्राप्त भी है]

योग:

उप-मंत्र (1) से (5) का संकलन

बटाए:-

(i) अधीनस्थ हानियाँ, प्राप्ति जो मुजराई के लिए प्राप्त है

(ii) अध्याय 8-क के अधीन अनुसूचित कटौतियाँ

अधिम कर के अधीन प्राप्त:

2. प्राकल्पित शुद्ध शुद्ध प्राप्त

3. अधिम कर के अधीन प्राप्त पर प्रभाष्य सकल प्राप्त-कर

4. अधिम कर के अधीन प्राप्त में सम्मिलित राशियाँ जिनकी बाबत कोई ऐसा कर संशेय नहीं है जिस पर कर का कोई रिबेट अनुसूचित है

(i) किसी रजिस्ट्रीकृत क्रम से प्राप्त का प्राप्त जिन पर कर का संशेय क्रम द्वारा किया जाएगा

(ii) व्यक्ति संगम या व्यक्ति निकाय से प्राप्त जिस पर कर का संशेय संगम या निकाय द्वारा किया जाएगा।

(iii) प्राप्त-कर मुक्त प्रतिभूतियों पर खाज।

(iv) अन्य सर्व

कुल रकम जिस पर कर संशेय नहीं है और ऐसी किसी रकम पर अनुपातिक कर,

5. पर 3 का अधिम

6. कटौती कीजिए: ऐसी कर की रकम जो द्वारा 192 से 195 के अधीन किसी प्राप्त पर (ऐसी वह अधिनियम के अधीन अनुसूचित कोई कटौतियाँ अनुज्ञात करने से पूर्व संगणित है) कटौती करने योग्य है और जिसे अधिम कर के अधीन प्राप्त की संगणना करते समय हिसाब में लिया गया है।

7. प्राप्त-कर की शुद्ध रकम

8. बटाए: प्राकल्पित बीहरे प्राप्त-कर से, यदि कोई है, राहत महुँ रकम

9. शुद्ध संशेय रकम

10. बटाए:-

(i) द्वारा 210 के अधीन वित्तीय वर्ष में पहले से संवत् कर

11. संशेय प्रतिशेय

स्थान

प्राकल्पन करने वाले

तारीख

व्यक्ति के हस्ताक्षर

प्राप्त-कर अधिकारी,

प्राप्ति

सेवा में,

- टिप्पण: 1. कर के प्राक्कलन पर उस व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षर किए जाने चाहिए जो आय-कर अधिनियम 1961 की धारा 140 में यथा उपबंधित आय-कर विवरणी पर हस्ताक्षर करने के लिए प्राधिकृत है।
- टिप्पण: 2. रजिस्ट्रीकृत फर्म की दशा में, फर्म की, वार्षिक वित्त अधिनियम की पहली अनुसूची के भाग 3 के अनुसार अपने द्वारा संदेय अग्रिम कर यदि कोई है, का एक प्राक्कलन प्रस्तुत करना होगा। प्रत्येक भागीदार को भी, अपने द्वारा संदेय अग्रिम कर का प्राक्कलन प्रस्तुत करना होगा जिसमें, रजिस्ट्रीकृत फर्म से आय का उसका अंश भी सम्मिलित होगा।
3. निर्विप्लवी के ऐसा हिन्दू अविभक्त कुटुंब होने की दशा में, जिसका कोई ऐसा सदस्य नहीं है जिसकी पूर्व वर्ष की कुल आय उस अधिकतम रकम से अधिक होने की संभावना है जो उसके मामले में आय-कर से प्रभावी नहीं है। कृपया सभी सदस्यों का/के इस आय का/के घोषणा पत्र संकलन करें।
4. सब 2, हिन्दू अविभक्त कुटुंबों, रजिस्ट्रीकृत फर्मों, आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 2 के खंड (31) के उपखंड (v) में निविष्ट व्यक्तियों या व्यष्टि-निकायों, जो निगमित हो या न हो, और उक्त खंड (31) के उपखंड (vii) में निविष्ट कृत्रिम नैतिक व्यक्तियों द्वारा ही भरी जानी चाहिए।
5. इस प्रारूप में "गृह कृषि आय" का बही अर्थ है जो उसे सुसंगत वित्त अधिनियम में दिया गया है।
6. इस प्रारूप के पैरा 2 में निविष्ट निर्धारण अधिकारी के आदेश में गणित संबंधी गलती, यदि कोई है, का धीरा संलग्न करें।
- (iii) प्रारूप सं. 39 का लोप किया जाएगा।

[सं. 8452/का. सं. 142/3/89/टी पी एल]

अरविंद मोदी, अवर सचिव

MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Revenue)  
CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES  
NOTIFICATION

New Delhi, the 13th September, 1989

## INCOME-TAX

S.O. 719(E).—In exercise of the powers conferred by section 295 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Income-tax Rules, 1962, namely :—

1. (1) These rules may be called the Income-tax (Tenth Amendment) Rules, 1989.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Income-tax Rules, 1962,—

(a) in Part VII,—

(i) rule 38A shall be omitted,

(ii) for rule 39, the following rules shall be substituted, namely :—

“39. The intimation which an assessee has to send to the Assessing Officer under sub-section (5) of section 210 shall be in Form No. 28A”;

(iii) in rule 40, after sub-rule (5), the following sub-rule shall be inserted, namely :—

“(6) Nothing contained in this rule shall apply in respect of any assessment for the assessment year commencing on the first day of April, 1989 or any subsequent assessment year.”;

(b) for rule 119A, the following rule shall be substituted, namely :—

“119A. In calculating the interest payable by the assessee or the interest payable by the Central Government to the assessee under any provision of the Act,—

(A) where interest is to be calculated on annual basis the period for which such interest is to be calculated shall be rounded off to a whole month or months and for this purpose any fraction of a month shall be ignored, and the period so rounded off shall be deemed to be the period in respect of which the interest is to be calculated;

(B) where the interest is to be calculated for every month or part of a month complied in a period, any fraction of a month shall be deemed to be a full month and the interest shall be so calculated;

(C) the amount of tax, penalty or other sum in respect of which such interest is to be calculated shall be rounded off to the nearest multiple of one hundred rupees and for this purpose any fraction of one hundred rupees shall be ignored and the amount so rounded off shall be deemed to be the amount in respect of which the interest is to be calculated.”;

(C) in Appendix II,—

(i) for Form No 28, the following Form shall be substituted, namely :—

## FORM NO. 28

(See rule 38)

Notice of demand under section 156 of the Income-tax Act, 1961 for payment of advance tax under sub-section (3) or sub-section (4) of section 210.

To

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

This is to give you notice under section 210 of the Income-tax Act, 1961, that the sum of Rs. \_\_\_\_\_ as specified in the enclosed order has been determined to be payable by you during the financial year 19...19

2. The amount is payable in two instalments mentioned in the Table.

TABLE

Due date of instalment	Amount payable
On or before the 15th December.	Not less than fifty per cent. of such advance tax.
On or before the 15th March.	The whole amount of such advance tax as reduced by the amount, or amounts, if any, paid in the earlier instalment or instalments.

The amount is payable to \_\_\_\_\_

Manager, authorised bank

Manager, State Bank of India at \_\_\_\_\_

Reserve Bank of India.

When, if the amount is paid, you will be granted a receipt \_\_\_\_\_ Challan(s) is/are enclosed for the purpose, in which you should enter the amount of each instalment at the time of payment.

3. If at any time before the 1st instalment as aforesaid is due, you estimate that your income subject to advance tax for the previous year relevant to the assessment year commencing on the 1st day of April, 19....., is less than the income on which you have been asked to pay advance tax as above and accordingly you wish to pay an amount less than the amount which you have been so required to pay you may send to the Assessing Officer in Form 28A reasons for the lower estimate made by you and enclose an estimate of the advance tax so payable on such income calculated in the manner laid down in section 209 and in that event you should pay such amount (less any instalment already paid in accordance with paragraph 2 of this notice.) as accords with your estimate in such proportions on such dates specified therein. For this purpose you should enter in the appropriate challans the amount payable according to your estimate. You may revise the amount payable at any time before the last instalment is due and may adjust any excess or deficiency in respect of the instalment already paid in the subsequent instalment.

4. If in your estimation, the advance tax payable on your current income exceeds the amount of advance tax specified in an order of the Assessing Officer under sub-section 3 of sub-section 4 of section 210 or as intimated by you under sub-section 5 of that section, you will pay on or before the due date of last instalment specified in section 211, an appropriate part or, as the case may be the whole of such higher amount of advance tax according to your estimate.

5. If you are liable to pay advance tax under section 208 and have failed to pay such tax or the advance tax paid by you under the provisions of section 210 is less than 90% of the assessed tax, you will be liable to pay interest according to the provisions of section 234B. If you have failed to pay the instalments of advance tax by the specified dates, interest will be charged as per section 234C of the Income-tax Act, 1961.

\_\_\_\_\_  
Assessing Officer.

\_\_\_\_\_  
Address

Place \_\_\_\_\_

Date \_\_\_\_\_

## ENCLOSURE TO FORM No. 28

Order under section 210 of the Income-tax Act, 1961.

Name of the assessee \_\_\_\_\_ District or area \_\_\_\_\_ Status\* \_\_\_\_\_  
 Permanent Account Number \_\_\_\_\_ Address \_\_\_\_\_

1. Total income on the basis of which regular assessment has been made/return of income has been filed by you, for a subsequent year, being that for the year 19—19—, Rs. \_\_\_\_\_
2. Income subject to advance tax. \_\_\_\_\_
3. Net agricultural income, if any, to be taken into account for purposes of computing advance tax. \_\_\_\_\_
4. Gross income-tax chargeable on 'income subject to advance tax' \_\_\_\_\_
5. Sums included in 'income subject to advance tax' in respect of which income-tax is not payable or on which a rebate of income-tax is admissible. \_\_\_\_\_
  - (i) Share of income from an association of persons or body of individuals or an unregistered firm on the profits of which tax has already been paid. \_\_\_\_\_
  - (ii) Interest on income-tax free securities \_\_\_\_\_
  - (iii) Others items \_\_\_\_\_
6. Total amount on which tax is not payable and the proportionate tax on such an amount \_\_\_\_\_
7. Deduct : Tax which is deductible under section 192 to 195 on any income (as completed before allowing any deductions admissible under the Act and which has been taken into account in computing the 'income subject to advance tax'. \_\_\_\_\_
8. Net amount of income-tax. \_\_\_\_\_
9. Less : Amount on account of estimated double income-tax relief, if any. \_\_\_\_\_
10. Balance payable \_\_\_\_\_
11. Less : Tax already paid in the financial year under section 210 in compliance with the previous notice of demand served on—19— \_\_\_\_\_

NET AMOUNT OF TAX PAYABLE \_\_\_\_\_

12. Total sum payable (in figures as well as words)

Rs. \_\_\_\_\_ (Rs. \_\_\_\_\_)

Assessing Officer \_\_\_\_\_

Address \_\_\_\_\_

Date \_\_\_\_\_

Notes : \*In the case of a Hindu undivided family, please state whether the Hindu undivided family has at least one member whose total income of the relevant previous year exceeds the maximum amount not chargeable to income-tax in this case.

(ii) for Form No. 28A, the following Form shall be substituted, namely :—



(ii) for Form No. 28A, the following Form shall be substituted, namely :—

**FORM NO. 28A**

(See rule 38A)

Intimation to the Assessing Officer under section 210(5) regarding the notice of demand under section 156 of the Income-tax Act, 1961 for payment of advance tax under section 210(3)/210(4) of the Act.

Dated \_\_\_\_\_

To

The Assessing Officer,  
\_\_\_\_\_  
\_\_\_\_\_

Sir,

Re.: Notice of demand u/s 156 of the I.T. Act, 1961 for payment of Income-tax u/s 210(3)/210(4) of the Act in the case of \_\_\_\_\_ for A.Y. 19\_\_\_\_19\_\_\_\_.

The notice of demand u/s 156 of the I.T. Act for payment of advance tax and the order u/s 210(3)/210(4) of the Act, dated \_\_\_\_\_ has been served on me on \_\_\_\_\_

(date of service of notice).

2. I do hereby intimate that the estimate of income and the advance tax payable made by you and contained in the enclosure to Form 28, is high because of the following reasons :

- (i) There is an arithmetical error in the computation shown in F.No. 28.
- (ii) In respect of the income assessed for AY 19\_\_\_\_19\_\_\_\_, there was a mistake apparent from record within the meaning of section 154 of the Income-tax Act, 1961 for which the application has been filed on \_\_\_\_\_, is being filed.
- (iii) There has been loss /no income under the head 'capital gains' in the current year.
- (iv) There has been no income of the nature referred to in section 2(24)(ix) in the current year.
- (v) Any other reasons (specifying the reasons).

3. The estimate of income for the previous year relevant to the assessment year 19\_\_\_\_ taking into account the reasons mentioned in para 2 above is as follows :

Estimated 'income subject to advance tax':

- (1) Income from 'salaries' \_\_\_\_\_
- (2) Income from capital gains \_\_\_\_\_
- (3) Income from house property \_\_\_\_\_
- (4) Profits and gains of business or profession \_\_\_\_\_

(a) Profit and gains from business and, profession carried on by me/us.

Name \_\_\_\_\_ Address \_\_\_\_\_

(i) \_\_\_\_\_

(ii) \_\_\_\_\_

(b) Share from firm(s) :

Name of the firm	Address	Whether firm has been registered in the last completed assessment.	Share of income
_____	_____	_____	_____

(c) Income from an association of persons or body of individuals	_____
Total : (a)+(b)+(c)	_____
(5) Income from other sources :	_____
(i) Dividends	_____
(ii) Interest	_____
(iii) Other incomes [including income referred to in section 2(24)(ix)]	_____
Total:	_____
Aggregate of sub-items (1) to (5)	_____
(i) carried forward losses, etc., eligible for set off.	_____
(ii) deductions admissible under Chapter VI-A.	_____
Income subject to advance tax	_____
2. Estimated net agricultural income	_____
3. Gross income-tax chargeable on income subject to advance tax.	_____
4. Sums included in income subject to advance tax in respect of which no tax is payable on which a rebate of tax is admissible	_____
(i) Share of income from an unregistered firm on which the tax will be paid by the firm	_____
(ii) Share from an association of persons or body of individuals on which tax will be paid by the association or body	_____
(iii) Interest on income-tax free securities.	_____
(iv) Other items	_____
Total amount on which tax is not payable and the proportionate tax on such amount.	_____
5. Excess of 3 over 4.	_____
6. Deduct : Amount of tax deductible under section 192 to 195 on any income (as computed before allowing any deduction admissible under the Act) and which has been taken into account in computing the income subject to advance tax.	_____
7. Net amount of income-tax.	_____
8. Less : Amount on account of estimated double income-tax relief, if any.	_____
9. Net amount payable :	_____
10. Less :	_____
(i) tax already paid in the financial year under section 210.	_____
11. Balance payable	_____

Signature of the person making  
the estimate.

Place \_\_\_\_\_

Date \_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

Status

To  
The Income-tax Officer,  
\_\_\_\_\_

---

**Notes :**

1. The estimate of tax should be signed by a person who is authorised to sign a return of income as provided in section 140 of the Income-tax Act, 1961.

2. In the case of a registered firm, the firm has to submit an estimate of the advance tax payable, if any, by it in accordance with Part III of the First Schedule to the annual Finance Act. The individual partners have also to submit an estimate of the advance tax payable by each including therein the share of income from the registered firm.

3. In the case of an assessee being a Hindu undivided family which has no member whose total income of the previous year is likely to exceed the maximum amount not chargeable to income-tax in his case please attach declaration(s) to this effect from all members.

4. Item 2 to be filled in only by individuals, Hindu undivided families, unregistered firms, other association of persons or bodies of individuals, whether incorporated or not, referred to in sub-clause (v) of clause (31) of section 2 of the Income-tax Act, 1961, and artificial juridical persons referred to in sub-clause (vii) of the said clause (31).

5. In this Form, 'net agricultural income' shall have the meaning assigned to it in the relevant Finance Act.

6. Details of arithmetical error if any in the order of the Assessing Officer referred to in para 2 of this Form, may be annexed.

(iii) Form No. 29 shall be omitted.

[No. 8452/F.No. 142/3/89-TPL]

ARBIND MODI, Under Secy.

